

सीरी पिलानी के वैज्ञानिकों ने बनाए ई-क्रेकर्स

प्रदूषण रहित इलेक्ट्रॉनिक पटाखों का किया आविष्कार: प्रो. चौधरी

पिलानी। सेंट्रल इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीरी) पिलानी के युवा वैज्ञानिकों द्वारा हाल ही में ई-क्रेकर्स अर्थात् पटाखों (फायरक्रेकर्स) के इलेक्ट्रॉनिक संस्करण की तीन किस्में के विकसित की हैं। यह जानकारी सीरी पिलानी के निदेशक प्रो. शांतनु चौधरी ने सोमवार को प्रेस वार्ता के दौरान दी। उन्होंने बताया कि राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित केंद्र सरकार के शोध संगठन सीएसआईआर की राष्ट्रीय प्रयोगशाला ने ऐसे ई-क्रेकर्स अर्थात् इलेक्ट्रॉनिक पटाखों का आविष्कार किया है, जो वायु प्रदूषण को प्रभावित करने वाले खतरनाक धुएं के बिना प्रकाश और ध्वनि उत्पन्न करते हैं तथा पारंपरिक आतिशबाजी का आभास कराते हैं।

देश में त्योहारों के दौरान होने वाले प्रदूषण की भारी समस्या को देखते हुए सीरी पिलानी के युवा वैज्ञानिकों अंकुश जैन, आनन्द अभिषेक, सुभाष कुमार राम, राहुल प्रवेश, नीरज कुमार व सुभाषचन्द्र बोस की टीम के सदस्यों द्वारा अपने राष्ट्रीय व सामाजिक दायित्व को निभाते हुए पिलानी स्थित सीएसआईआर सीरी पिलानी की राष्ट्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला 'केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान सेंट्रल इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीरी), पिलानी द्वारा ई-क्रेकर्स अर्थात् पटाखों



या फायरक्रेकर्स के इलेक्ट्रॉनिक संस्करण की तीन किस्में: ई-लड़ी, ई-अनार और ई-चरखी विकसित की हैं। संस्थान द्वारा विकसित ई-लड़ी एक साथ बंधे क्रेकर्स की एक लड़ी

है जो कुछ समय के लिए निरंतर आवाज (ध्वनि) और रोशनी का प्रभाव (इफेक्ट) उत्पन्न करती है। हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा प्रदूषण के संबंध में जारी दिशा-

निर्देशों और देश में बढ़ते हुए प्रदूषण के मद्देनजर सीरी के वैज्ञानिकों का यह प्रयास क्रांतिकारी सिद्ध होगा।

संस्थान के निदेशक प्रोफेसर शांतनु चौधरी ने बताया कि संस्थान के वैज्ञानिकों डॉ अंकुश जैन, डॉ नीरज कुमार, डॉ राहुल प्रवेश, श्री आनंद अभिषेक और श्रीसुभाष कुमार राम की टीम द्वारा विकसित ये ई-क्रेकर्स विभिन्न प्रकार के रोशनी पैटर्न और ध्वनियां उत्पन्न करते हैं और इन्हें पुनः उपयोग किया जा सकता है। उपयोग में अत्यंत सरल यह उपकरण पूरी तरह से सुरक्षित, प्रदूषण रहित और पर्यावरण हितैषी होने के कारण ग्रीन पटाखों की श्रेणी में शामिल हैं।

प्रोफेसर शांतनु चौधरी ने कहा कि 'संस्थान द्वारा विकसित ई-क्रेकर्स की विभिन्न किस्मों में थर्मल स्टिमुलस का प्रयोग किया जा सकता है। इससे ये

क्रेकर्स उस समय क्रियाशील हो जाएंगे, जब उनके पास कोई आग का कोई स्रोत लाया जाए। इससे उपयोगकर्ताओं को उसी प्रकार का अनुभव होगा जैसे वे वास्तव में कोई पटाखा जला रहे हों या आतिशबाजी कर रहे हों। पत्रकारों से चर्चा के दौरान सीएसआईआर-सीरी के निदेशक प्रोफेसर चौधरी ने कहा कि पारंपरिक पटाखों (क्रेकर्स) के उपयोग में जोखिम भी रहता है क्योंकि कुछ क्रेकर्स अक्सर छिटक कर बिखर जाते हैं जिससे दुर्घटनाओं की संभावना रहती है और साथ ही जहरीला और हानिकारक धुआं भी पैदा होता है। लेकिन सीरी के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित ई-क्रेकर्स पूरी तरह से सुरक्षित हैं। प्रोफेसर चौधरी ने बताया कि प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के उपरांत इसके व्यावसायिक उत्पादन के लिए कुछ निवेशकों के साथ बातचीत भी चल रही है।

उन्होंने आशा व्यक्त की कि पर्यावरण की सुरक्षा के लिए शीघ्र ही निवेशक सामने आएंगे और इनका व्यावसायिक उत्पादन आरंभ होगा। उन्होंने बताया कि यह आविष्कार चाईनीज निर्मित इलेक्ट्रॉनिक तकनीकी से विभिन्न है। चाईनीज द्वारा बनाया जा रहा है ऐसे उत्पादकों की कीमत लगभग 1500 से 1800 रुपए तक की लागत आती है जबकि सीरी पिलानी के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित इन उत्पादकों की कीमत राशि 1000 से 1200 तक की लागत है।

